

विचार बिन्दु

वृक्ष खुद गर्मी सहन कर शरण में आये राहगीर को गर्मी से बचाता है। —कालिदास

व्याधिक्षमत्व

लगभग 5000 वर्ष पूर्व की बात है। आत्रेय के शिष्य अग्निवेश ने अपने गुरु से एक प्रश्न किया: भगवन्! देखने में आता है कि हितकारी आहार का उपयोग करते हुये भी कुछ लोग रोगी हो जाते हैं, जबकि अहितकारी आहार लेते हुये भी कुछ लोग निरोगी देखे जाते हैं। ऐसी स्थिति में क्या अच्छा है और क्या बुरा इसकी पहचान कैसे की जाये? इस प्रश्न का जो उत्तर आत्रेय ने दिया, वह आज भी यथावत विज्ञान-संगत है।

आत्रेय का उत्तर था: अग्निवेश! हितकारी आहार करने वाले लोगों में आहार के कारण होने वाले रोग उत्पन्न नहीं होते और हितकारी आहार लेने मात्र से समस्त रोगों का भय दूर नहीं हो जाता। हानिकारक भोजन के अलावा भी रोगों के तमाम कारण, जैसे ऋतुओं का विपरीत होना, प्रजापराध या जानबूझकर गलती करना, शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध का अतियोग, मिथ्या योग एवं विषम योग आदि ऐसे कारण हैं जो उचित भोजन लेने के बावजूद भी मनुष्य को बीमार कर देते हैं। इसीलिये हितकारी आहार लेने वाले रोगी हो जाते देखे जाते हैं। हानिकारक आहार का उपयोग करने वालों में पथ्य, आहार, व शरीर की स्थिति में भिन्नता होने से हानिकारक आहार तुरन्त हानि नहीं पहुँचा पाते। सभी अपथ्य बराबर दोष वाले नहीं होते, न ही सभी दोष बराबर बलवान होते, और न सभी शरीर व्याधिक्षमत्व या रोग प्रतिरोधक क्षमता से संपन्न होते (न च सर्वाणि शरीराणि व्याधिक्षमत्वे समर्थानि भवन्ति। च.सू.28.7.) इस बात में कोई संदेह नहीं है कि एक ही अपथ्य आहार जगह, समय, संयोग, वीर्य, व मात्रा की भिन्नता के कारण या ज्यादा खा लेने से और अधिक अपथ्य हो जाता है। वही दोष विविध कारणों से, विरुद्ध चिकित्सा वाला, धातुओं में पहुँचा हुआ, शरीरके प्राणायतन में उत्पन्न, मर्म पर चोट करने वाला, अत्यंत कष्टदायी अतिशय जल्दी रोगों को उत्पन्न करने वाला होता है। अंत में आत्रेय यह भी बताते हैं कि मूल रूप से शरीर को बनावट भी नैसर्गिक व्याधिक्षमत्व पर प्रभाव डालती है। बहुत मोटे याबहुत दुबले लोग, रक्त, मांस, व अस्थियों के सुसंगठित न होने के कारण बेडौल शरीर वाले लोग, दुर्बल, अल्पसत्व या कमजोर मनोबल वाले लोगों में रोगों को सहने की क्षमता नहीं होती। जबकि इनके उलट लक्षणों वाले लोगों में रोगों को सहने की क्षमता होती है। इन अपथ्य आहारों, दोषों व शरीर की भिन्नता के कारण बीमारियों भी कम या ज्यादा, जल्दी या देर से उत्पन्न होती हैं।

जिस व्यक्ति का सहज (इनेट) या युक्तिकृत (डेराइड्ड) व्याधिक्षमत्व मजबूत है वह मुश्किल से ही बीमार पड़ता है। यदि बीमार पड़ भी जाये तो बीमारी अपना बल मुश्किल से ही दिखा पाती है। व्याधिक्षमत्व में दो शब्द निहित हैं, व्याधि एवं क्षमत्वा। व्याधि का तात्पर्य शरीर की धातुओं (रस, रक्त, मांस, मेदा, अस्थि, मज्जा, शुक्र) में विषमता उत्पन्न होना है। क्षमत्व से तात्पर्य इस विषमता को न होने देने की क्षमता है। मानसिक बीमारियों के सन्दर्भ में सत्व गुण जितना अधिक होगा, व्याधिक्षमत्व उतना ही बेहतर होगा। शरीर में सहज व्याधिक्षमत्व के सन्दर्भ में यह बात महत्वपूर्ण है कि शरीर में दुरुस्त मांसपेशियों, संरचना, स्वरूप व मजबूत इन्द्रियों वाला व्यक्ति रोगों के बल से कभी प्रभावित नहीं होता। भूय, व्यास, ठंडी, गर्मी, व्यायाम को ठीक से सहन करने वाला, सम अग्नि वाला, बुढ़ापे की उम्र में ही बुढ़ा होने वाला, मांसपेशियों के सही चयन वाला व्यक्ति ही स्वस्थ है (च.सू.21.1.8): सममांसमण्डुसु समसंहनो नः। दूढेन्द्रियो विकाराणां न बलेनाभिभूयते।। क्षुत्पिपासातपसहः शीतव्यायामसंसेहः। समपक्ता समजरः सममांसचयो मतः।।

आधुनिक वैज्ञानिक संदर्भ में व्याधिक्षमत्व को इम्यूनटीटी कहा जाता है। यह प्रतिरक्षा तंत्र संक्रमण, बीमारी या अन्य अवांछित तत्वों के आक्रमण से बचने के लियेशरीर कोरक्षुत्सा प्रदान करता है। व्याधिक्षमत्व में कमी होने से शरीर इम्यूनो-क्रोमोमाइड्ड स्थिति में आ जाता है। ऐसी स्थिति में शरीर की रोग-प्रतिरोधक क्षमता कम होने से रोगजनन आसानी से होता है। इम्यूनटीटी किसी व्यक्ति के शरीर में विशिष्ट एन्टीबॉडी या श्वेतरक्त कोशिकाओं की क्रिया से किसी विशेष संक्रमण, विषाक्त पदार्थ या हानिकारी जीवन-शैली से होने वाले रोगों का प्रतिरोध करने की क्षमता के रूप में समझा जाता है।

आधुनिक वैज्ञानिक अध्ययनों के अनुसार इम्यूनटीटी मूलतः दो प्रकार से समझी जा सकती है: इनेट (जन्मजात) और एडाप्टिव (अनुकूलनीय)। इनेट-इम्यूनटीटी प्रतिरक्षा की पहली पंक्ति है जो पैथोजेन को मारने वाली कोशिकाओं जैसे न्यूट्रोफिल और मैक्रोफेज द्वारा संपादित की जाती है। किसी विषाणु का संक्रमण होने पर ये किलर-सेल्स तेज गति से सबसे पहले अपना काम करती हैं। एडाप्टिव-इम्यूनटीटी की क्रियात्मकता तुलनात्मक रूप से धीमी होती है। इस तंत्र में टी-कोशिकाओं, बी-कोशिकाओं और एन्टीबॉडी जैसे व्यवस्था है

जो विशिष्ट रोगजनकों पर प्रतिक्रिया देता है। यह तंत्र इम्यून-मेमोरी के लिये भी उत्तरदायी है जो मानव में पहले दुबरा कुछ बीमारियों को पहचानता है और दुबारा नहीं होने देता। मेमोरी बी-सेल नामक कोशिकाएँ पैथोजेन को पहचानती हैं, और दुबारा संक्रमण होने पर त्वरित-प्रतिक्रिया करते हुये संक्रमण को निष्फल करने का काम करती हैं। हालाँकि नवीन शोध यह बताती है नेचुरल-किलर कोशिकाओं की एडाप्टिव-इम्यूनटीटी प्रतिक्रिया का प्रदर्शन कर सकती है। जो भी हो, गडबड तब होती है जब कुछ वायरस या माइक्रोब्स अपने पूर्ण रूप से म्यूटेट या उत्परिवर्तित होकर इम्यून-मेमोरी (प्रतिरक्षा स्मृति) को गच्चा दे देते हैं।

व्याधिक्षमत्व को परिभाषित करते हुये चरकसंहिता के दिग्गज टीकाकार आचार्य चक्रपाणि ने लगभग 900 साल पहले लिखा (च.सू. 28.7 पर चक्रपाणि): व्याधिक्षमत्वं व्याधिबलविरोधित्वं व्याध्याप्यदाप्रतिबन्धकत्वमिति यावत्। तात्पर्य यह है कि व्याधिबल की विरोधिता व व्याधि की उत्पत्ति में प्रतिबंधक होना व्याधिक्षमत्वहै। अधिप्राय यह है कि शरीर मेंउत्पन्न बीमारी के बल या तीक्ष्णता को रोकने और बीमारी की उत्पत्ति को रोकने वाली क्षमता को व्याधिक्षमत्व कहा जाता है।

व्याधिक्षमत्व को बल, ओज और प्राकृत श्लेष्मा के रूप में भी जाना जाता है। बल वह शक्ति है जिसके द्वारा शरीर विभिन्न चेष्टाओं से कार्य संपन्न करता है। इस कार्योंत्पादक शक्ति को व्यायाम-शक्ति से जाना देखा जाता है। बल के तीन प्रकार हैं (च.सू.11.3.6): त्रिविधं बलमिति- सहजं, कालजं, युक्तिकृतं च। सहजं यच्छरीरसत्त्वयोः प्राकृतं, कालकृतमृत्तुविभागजं वयःकृतं च, युक्तिकृतं पुनस्तद्यदाहारचेष्टायोगजम्। बल तीन प्रकार के होते हैं। सहज बल शरीर और मन पर आधारित होता है। उम्र के साथ शरीर की वृद्धि से प्राप्त बल को कालज बल कहा जाता है। खान-पान, जीवन-शैली और व्यायाम आदि की युक्ति से प्राप्त बल को युक्तिकृत बल कहा जाता है। रोग से रक्षा करने वाले को बल कहा जाता है। व्याधिक्षमत्व को ओज और ओज को बल केरूप में भी समझा जाता है (सू.सू.15.1.9) रसादीनों शूक्रान्तानां धातूनां यत् परं तेजस्तत् खल्वोजस्तदेव बलमित्युच्यते स्वशास्त्रविद्वान्तात्। रसादिक तथा शूक्रान्त धातुओं के उत्कृष्ट सार भाग को ओज कहते हैं तथा आयुर्वेद के अनुसार उसी का दूसरा नाम बल है। यही बल व्याधियों से शरीर की रक्षा करता है। यहाँ एक बात समझना आवश्यक है ओज और बल हालाँकि एक कहे गये हैं किन्तु ओज को कारण और बल को कार्य माना जाता है। ओज का रूप, रस और वर्ण होने से द्रव्य है जबकि बल इसका कार्य है। यहाँ व्याधिक्षमत्व के सन्दर्भ में बल (कार्य) और कारण (ओज) को एक मान लिया जाता है। इसी सन्दर्भ में प्राकृत कफ को बल याव्याधिक्षमत्व का कारण माना जाता है (च.सू.17.11.7): प्राकृतस्तु बलं श्लेष्मा विकृतो मल उच्यते। स चैवैजः स्मृतः काये स च पाप्मोपदिश्यते।। यही कारण है कि कफज प्रकृति में उत्तम बल, पित्तज प्रकृति के व्यक्तियों में मध्यम बल तथा वातज प्रकृति के व्यक्तियों में अवर बल होता है।

इस प्रकार व्याधिक्षमत्व का तात्पर्य व्याधि-बल का विरोध शरीरगत बल द्वारा किया जाता है। व्याधिक्षमत्व को प्रभावित करने वाले विभिन्न भावों को दशविधिरोगी परीक्षा के भावों में भी देखा जाता है। उदहारण के लिये व्यक्ति की मूलप्रकृति का बल से सीधा सम्बन्ध होता है। सबसे उत्तम समप्रकृति (वात-पित्त-कफज) है, परन्तु किसी जनसंख्या में समप्रकृति वाले बहुत कम होते हैं। अतः व्यवहार में कफ प्रकृति वालों को बेहतर बल वाला माना जाता है। इसके साथ ही सार भी बल को प्रभावित करता है। सायुक्त से तात्पर्य यह है कि व्यक्ति में साररूप धातुओं का नियमित निर्माण होता है। सार धातुओं के सम्यक् प्रकार से उत्पन्न होते रहने पर शरीर में व्याधिक्षमत्व बढ़िया बना रहता है। जैसा कि पूर्व में चर्चा की गयी है, बल कामुख्य कारक ओज है जो सभी धातुओं का सार है। साररूप में यह सभी धातुओं में व्याप्त होकर धातुओं की रक्षा करता है। व्याधिक्षमत्व को प्रभावित करने वाले अन्य भावों में सत्व्य, सत्व, अग्नि, शारीरिक-शक्ति व वय हैं। अग्निबल को आहार करने की क्षमता से परखा जा सकता है। आहार-शक्ति (आहार की मात्रा) अग्निबल पर आश्रित है। यदि व्यक्ति को आहार शक्ति मजबूत है तो भोजन का पाचन और धातुओं की पुष्टि यथोचित होने से शरीर मजबूत रहता है। व्यायाम-शक्ति या शारीरिक रूप से श्रम करने की शक्ति भी बल का संकेतक है। व्यक्ति की वय या उम्र का भी बल से संबंध होता है। युवावस्था में उत्तम बल और जरा या बुढ़ापा आने पर बल कम रहता है।

व्याधिक्षमत्व बढ़ाने के लिये बल व ओज की वृद्धि में सहायक द्रव्यों और क्रियाओं का इस प्रकार युक्तिपूर्वक नियमित सेवन करना चाहिये, जिससे व्याधिक्षमत्व का संरक्षण व वृद्धि हो किन्तु प्रकृति, अग्नि, धातुओं व मल क्रिया का समत्व तथाआत्मा, इन्द्रियों व मन की प्रसन्नता यथावत बनी रहे। यह विषय इतना विस्तृत है कि पूरा आयुर्वेद इसमें समाहित है। तथापि संक्षेप में व्याधिक्षमत्व बढ़ाने के लिये सात रक्षा-दीवारों की निरंतर और सम्यक् सार-सम्हाल करना आवश्यक है। इनमें आहार या खानपान, विहार या जीवनशैली, स्वस्थवृत्त या व्यक्तिगत स्वास्थ्य विषयक क्रियाएँ, सद्गत या व्यक्तिगत सदाचरण, पंचकर्म या शारीरिक विषाक्तता को बाहर करने के लिये आयुर्वेद की पांच प्रक्रियाएँ, रसायन या उम्र-आधारित रोगजनन को रोकने हेतु कायाकल्प उपाय, और अंततः औषधि या चिकित्सा शामिल हैं।

वायरस के कारण होने वाले रोगजनन वस्तुतः वायरस की मारक क्षमता और व्यक्ति के व्याधिक्षमत्व के बीच की क्रियात्मकता है। राजस्थान की घर-घर औषधि योजना में सम्मिलित तुलसी, कालमेघ, अश्वगंधा और गिलोय जैसे औषधीय पौधे शक्तिशाली प्रतिरक्षा-विनियामक और प्रतिरक्षा-बढ़ाने वाले प्रभाव दर्शित करते हैं जो वायरल संक्रमण की स्थिति में सहज प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया को बढ़ाकर संक्रमण के दुष्प्रभाव रोकने और कम करने में सहायक हो सकते हैं। इन पौधों को घर में ही उगाकर हम अपने वैद्य की सलाह से स्वयं को स्वस्थ रख सकते हैं।

—अतिथि सम्पादक,

डॉ. दीप नारायण पाण्डेय

(इंडियन फारेस्ट सर्विस में वरिष्ठ अधिकारी)

(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)

तत्कालीन शासक रावत गोविन्ददास ने भरपूर संरक्षण दिया बस्सी काष्ठ कला को

चित्तौड़गढ़ से 24 कि.मी. दूर बस्सी कस्बा प्राचीन समय से काष्ठ कला के लिए प्रसिद्ध रहा है। बस्सी की काष्ठ कला के जन्मदाता प्रभातजी सुधार माने जाते हैं। प्रभातजी सुधार ने बस्सी के कला प्रेमी तत्कालीन शासक रावत गोविन्ददास को सन् 1652 में



आदमकद गणगौर मेंट की। वे इसे देखकर अत्यधिक प्रसन्न हुए। यह गणगौर बस्सी के रावत केसरसिंह के यहाँ आजी सुरक्षित है। यह गणगौर प्रतिमा 370 वर्ष पुरानी होने के बावजूद इसका सौन्दर्य अद्वितीय है।

- काष्ठ कला की गणगौर प्रतिमा 370 वर्ष पुरानी होने के बावजूद इसका सौन्दर्य अद्वितीय है
- वर्तमान में इस कला ने देश एवं विदेश में सजावट का रूप ले लिया है

रावत गोविन्ददास जहांगीर के समय सोलहवीं शताब्दी में दिल्ली से आते हुए टोंक जिले के मालपुर कस्बे से प्रभातजी सुधार को साथ लाये। बस्सी में उनके रहने का मकान बनाकर दिया तथा कृषि के लिए 80 बीघा जमीन प्रदान की। मेवाड़ के महाराणा सज्जनसिंह, महाराणा फतहसिंह एवं महाराणा भीपालसिंह ने भी बस्सी के कलाकारों को प्रोत्साहन दिया। उदयपुर के लेकपेलेस एवं शिवनिवास महल और चित्तौड़गढ़ किले के फतह प्रकाश महलों में चित्रकारी एवं रंगाई का कार्य बस्सी के कलाकारों द्वारा ही किया गया है जिससे समय समय पर उन्हें नकद राशि एवं सरोपा प्रदान कर सम्मानित किया गया।

बस्सी के काष्ठ कलाकारों की विशेषता यह है कि वे राजस्थान की सभ्यता एवं संस्कृति के अनुरूप काष्ठ कृतियों निर्मित करते हैं। गणगौर, ईसर, कावड़, फड, बेवाण, कठपुतली, मन्दिरों के झुले, सिंहासन, बाजोट एवं मुखौटे आदि परम्परागत काष्ठ कलाएँ बनाने में सिद्धहस्त हैं। वहीं लकड़ी के खिलौने, हाथी, घोड़े, पशु पक्षी,



पन्नालाल मेघवाल

फर्नीचर, बेडिंग प्रेजेन्ट आदि निर्मित करने में महारत प्राप्त हैं। यहाँ के कलाकार हाथी के हौदों, सिंहासन, झुले, रथ एवं फर्नीचर पर आकर्षक कार्विंग करते हैं, वहीं इन पर चांदी एवं मेटल के कवर चढाकर अप्रतिम रूप प्रदान करते हैं।

राजस्थान में प्राचीनकाल में कावड़ रामायण, महाभारत, भागवत, गीता एवं कृष्णलीला आदि कथाओं के प्रचार-प्रसार का सशक्त माध्यम रही है। लकड़ी की बनी कावड़ आठ-दस एवं बारह पृष्ठवाली चित्रकथा है जिसमें पौराणिक चित्र अंकित होते हैं।

प्रारम्भ में कावड़ गायक कावड़ को कंधे पर रखकर गाँव गाँव में घूम कर एक तारे पर चैपालों में कथा बॉचने का काम करते थे। पश्चिमी राजस्थान में इस परम्परा का प्रचलन अधिक था। रामायण की कावड़ में राजा दशरथ, चार पुत्र, तीन रानियाँ, असुर यक्ष, ताडका वध, सीता स्वयंवर, सीता हरण, रामेश्वर मन्दिर, अशोक वाटिका, राम रावण युद्ध एवं राम राज्य के चित्र पर आधारित दस भाग होते हैं।

कृष्ण लीला कावड़ में कारागृह में कृष्ण का जन्म, माखन चोरी, कालियादेह में शेष नागवध, ग्वाल बाल सखाओं से टिठोली, गोपियों से आंख मिचौनी, कृष्ण द्वारा वरुहरण, गोवर्धन पर्वत को ऊँटाली पर उठाना, पुतना वध, नरसिंह अवतार, कंस वध, पांच पाण्डवों का अवतार एवं राम भरत मिलाप आदि बारह भाग होते हैं। लकड़ी के बने ये सभी भाग फोल्डिंग होते हैं। गायक इन चित्रों को दिखाते हुए सम्पूर्ण कथाओं का वाचन करते थे। फड भी ऐसी ही कला है। इसे कपड़े पर चित्रित करके पढा जाता था। वर्तमान में इस कला ने देश एवं विदेश में सजावट का रूप ले लिया है।

अन्य चतुर्दशी एवं देवझुलनी ग्यारस पर बेवाण निकालने की परम्परा है। बेवाण एक प्रकार का काष्ठ मन्दिर है। इसे मीनीचर वुडन टेम्पल भी कहते हैं।

बस्सी के कलाकार बेवाण बनाने में निपुण हैं तथा सीजन पर प्रतिवर्ष यहाँ सैकड़ों बेवाण बनते हैं। इन बेवाणों को बनाने एवं इन पर चित्रकारी का कार्य बड़ा कलात्मक होता है। कठपुतली भी राजस्थान की मशहूर कला है। कठपुतली प्रदर्शन ने देश में ही नहीं विदेश में भी अपनी छाप छोड़ी है। भारतीय लोक कला मण्डल, उदयपुर ने कठपुतली बनाने एवं इनका प्रदर्शन करने का कार्य निपुणता से किया है।

राजस्थान की परम्परा के अनुसार विवाह में लडकियों को बाजोट, तिलक, कुंकुम के चैपड़े एवं छोटी गणगौर की पुतलियाँ दी जाती हैं। इन्हें बेडिंग प्रेजेन्ट कहा जाता है। ये सभी चीजें बस्सी में कलात्मक ढंग से बनाई जाती हैं। यहाँ पर मुखौटे भी बनाये जाते हैं। लकड़ी के



खिलौने बनाने में बस्सी के कलाकारों की विश्व में धाक है।

यहाँ पर हाथी, घोड़े एवं पशु पक्षियों के आकर्षक खिलौने बनाये जाते हैं, जिनकी बिक्री भारत में ही नहीं विदेशों में भी होती है। यहाँ के कलाकार मन्दिरों एवं घरों में रंग विरंगे भीति चित्र बनाने में भी पारंगत हैं।

पन्नालाल मेघवाल, वरिष्ठ लेखक एवं स्वतंत्र पत्रकार।

ऑपरेशन "गरुड़" के तहत भारत-फ्रांस की सेनाओं का युद्धाभ्यास जारी

जोधपुर, (कास)। जोधपुर के वायुसेना स्टेशन पर में भारत व फ्रांस की एयर फोर्स का संयुक्त युद्धाभ्यास गरुड़ शनिवार को भी जारी रहा। 26 अक्टूबर से शुरू हुआ युद्धाभ्यास 12 नवंबर तक चलेगा। इस वॉर प्रैक्टिस के जरिए दोनों देशों की एयरफोर्स के पायलट्स एक-दूसरे के साथ अपने अनुभव साझा कर रहे हैं।

एयरफोर्स का युद्धाभ्यास थल सेना के युद्धाभ्यास से कई मायनों में अलग है। इसमें थल सेना के समान गोला बारूद काम में नहीं लिया जा

रहा। तकनीक का इस्तेमाल ज्यादा किया जा रहा है। इस युद्धाभ्यास में भी टारगेट पर वर्युअल हमले बोले जा रहे हैं। जिसमें डमी मिसाइलों के जरिये निशाना साधा जा रहा है। निशाना कितना सटीक रहा यह सब कुछ रिकॉर्ड किया जा रहा है। जमीन पर वापस आने के बाद डेटा निकाल कर इसकी जांच की जाती है। इसके बाद सभी पायलट्स को उनकी कमियों के बारे में बताया जाता है। टारगेट पर हमले डमी मिसाइल्स से होते हैं। हवा में टारगेट पर हमले होते हैं और सब

- दोनों देशों की एयरफोर्स के पायलट्स एक-दूसरे के साथ अपने अनुभव साझा कर रहे हैं
- एयरफोर्स के युद्धाभ्यास में तकनीक का इस्तेमाल ज्यादा किया जा रहा है

कुछ रिकॉर्ड होता है। इसके माध्यम से परखा जाता है कि निशाना कितना सटीक था।

इस युद्धाभ्यास में फ्रांस के राफेल के अलावा भारतीय राफेल, सुखोई, जगुआर व तेजस के अलावा हल्का लड़ाकू हेलिकॉप्टर रद्र, अवाक्स

विमान व हवा में तेज भरने वाले टैंकर हिस्सा ले रहे हैं। इन विमानों के समूह को दो हिस्सों में बांटा गया है। एक दुश्मन का और एक मेजबान का। इसके बाद शुरू होती है आसमान में मशककत। युद्धाभ्यास के दौरान काम ली जाने वाली डमी मिसाइल सही

मायने में एक लेजर बीम की तरह होती है। इसे फाइटर जेट एक-दूसरे के ऊपर या अपने लक्ष्य की तरफ किराते हैं। लक्ष्य पर इसके टच होने का पूरा रिकॉर्ड होता है। इसी रिकॉर्ड के आधार पर पायलट की कुशलता को परखा जाता है।

आसमान में दुश्मन के विमानों की पहचान कर उन पर हमला करना या अपने तय लक्ष्य पर बम गिराने के अलावा दुश्मन की मिसाइलों से स्वयं के फाइटर का बचाव करना सबसे महत्वपूर्ण है।

देखरेख के अभाव में नेहरू बालोद्यान के अस्तित्व पर संकट

सांभरझील, (निर्स) यहाँ पांच बत्ती चौराहा स्थित सार्वजनिक नेहरू बालोद्यान में देखरेख के अभाव अस्तित्व पर संकट उत्पन्न हो रहा है। निवर्तमान भाजपा के बोर्ड में इसकी चारदीवारी पर शुरू की महापुरुषों, प्रमुख धार्मिक स्थलों, पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए चित्रकारी योजना

5 साल बाद भी अधूरी पड़ी है। पार्क के मुख्य द्वार के पास चारदीवारी पर पृथ्वीराज चौहान का चित्र उकरने के बाद इस योजना पर विराम लग चुका है। यहाँ पर बच्चों के खेलने के लिए झुला लंबे समय से टूटा पड़ा है। सांसद कोटे से लगाई गई जिम का समय-समय पर मेंटिनेंस नहीं होने से कई सामान खराब पड़े हैं। इंदिरा रसोई योजना के पिछवाड़े की तरफ बने पेशाब घर में देसी दारू के पच्चे पड़े हुए हैं।

खास बात यह है कि इंदिरा रसोई योजना की भव्यता को प्रदर्शित करने के लिए सस्ते में बनवाए गए तीन बड़े-बड़े फ्लेक्स पार्क के अलग-अलग

हिस्सों में बेकार पड़े हुए हैं। पार्क में पेड़ पौधों को नियमित रूप से भी पानी नहीं मिल रहा है।

इसी पार्क में मुख्य द्वार के ठीक सामने लोगों को आकर्षित करने के लिए फव्वारा एक दशक से भी अधिक

- उद्यान में बच्चों के झूले पड़े हैं
- गार्डन के पेशाब घर में जमा गंदगी

समय से नकारा पड़ा है। इसी पार्क में 15 अगस्त, 26 जनवरी के दिन नगर के प्रथम नागरिक की ओर से झंडारोहण किए जाने की परंपरा रही है लेकिन इसकी महत्ता को बरकरार नहीं रखा जा रहा है।

सारांश यह है कि जिस गार्डन को विकसित करने के लिए नगर के लोगों को निवर्तमान बोर्ड ने सुनहरे सपने दिखाए थे वह तो पूरे नहीं हो सके लेकिन वर्तमान हालात और भी ज्यादा विकट है। बताया जा रहा है कि इसकी



एक दशक से भी अधिक समय से नकारा पड़ा फव्वारा।

चारदीवारी पर नए सिरे से करवाया गया प्लास्टर व अन्य विकास कार्यों पर तत्कालीन बोर्ड के कार्यकाल के

दौरान खर्च किए गए लाखों रुपये का हिसाब कोई पृष्ठन वाला नहीं है। लोगों का कहना है कि इस संबंध में पालिका

प्रशासन की ओर से कोई ठोस कदम नहीं उठाए गए तो पार्क की दुर्दशा होने से कोई नहीं रोक सकता है।

राशिफल रविवार 30 अक्टूबर, 2022



पंडित अनिल शर्मा

कार्तिक मास, शुक्ल पक्ष, षष्ठि तिथि, रविवार, विक्रम संवत् 2079, मूल नक्षत्र प्रातः 7:26 तक, सुकर्म योग सांय 7:15 तक, कोलव करण सांय 4:39 तक, चन्द्रमा धनु राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-तुला, चन्द्रमा-धनु, मंगल-मिथुन, बुध-तुला, गुरु-मीन, शुक्र-तुला, शनि-मकर, राहु-मेघ, केतु-तुला राशि में।

आज सर्वाथ सिद्धि योग सूर्योदय से प्रातः 7:26 तक है। आज मंगल वक्रो सांय 4:55 से होगा। आज डाला छूट पर्व पूर्ण होगा। आज डाला छूट पर्व पर अस्तगामी सूर्य के अर्धय दिया जायेगा।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: चर 8:02 से 9:25 तक, लाभ-अमृत 9:25 से 12:10 तक, शुभ 1:33 से 2:56 तक।

राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 6:39, सूर्यास्त 5:42

मेघ
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। शुभ कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा।

वृष
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

मिथुन
परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कर्क
विवादिता मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अनाहोनी की आशंका से बचा हुआ मन का भय समाप्त होगा। आवश्यक कार्य के लिए बाहर जाना पड़ सकता है।

सिंह
महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। नवीन कार्यों में सफलता से मनोबल बढ़ेगा। आवा व्यक्तित्व प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में सुख-सुविधाएँ बढ़ेंगी।

कन्या
परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज अतिथियों का आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

तुला
परिवार में शुभ और मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिवारों के सहयोग से अटके हुए कार्य बनने लगेगे। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी।

वृश्चिक
आर्थिक कार्यों से अटके हुए कार्य बनने लगेगे। संभावित खोत से धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों में प्रायति होगी। घर-परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

धनु
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति ठीक रहेगी। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनायुक्त बनने लगेगे। घर-परिवार में सुख-सुविधाएँ बढ़ेंगी और परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मकर
अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। आवश्यक धन खर्च होगा। व्यक्तिगत कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। पारिवारिक कार्यों के कारण यात्रा संभव है।

कुंभ
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। स्वास्थ्य ठीक करेगा।

मीन
अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।